

पतन, पुनर्स्थापन, पूर्णता और समर्पण

निर्गमन 32:1-40:38

यह ध्यान देने योग्य है कि इस मन्दिर, पुरोहित परिवार, लेवीयों, और बलिदान प्रणाली का मूल उद्देश्य स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया जाना था, जिसे ईश्वर द्वारा पहले महायाजक के रूप में सेवा करने के लिए चुना गया था, जो मूसा के भाई आरोन थे।

ईश्वर ने इस्राएलियों के साथ एक वाचा बनाई। यदि वे उसकी आज्ञा मानें और उसकी पूजा करें, तो वह उन्हें भूमि, सुरक्षा और समृद्धि प्रदान करेगा। समस्या यह थी कि भले ही ईश्वर अपनी वाचा के वादों को पूरा करने के लिए तैयार और सक्षम था – इस्राएलियों ने ऐसा नहीं किया। यह स्पष्ट रूप से दिखा जब लोग और उनके उच्च पुरोहित, आरोन, पाप में पड़ गए, जैसे ही मूसा को माउंट सीनाई पर ईश्वर द्वारा आज्ञाएँ, तम्बू का योजना और बलिदान प्रणाली दी गई।

यह जानते हुए कि इस्राएलियों में से कोई भी वाचा के वादे का पालन नहीं कर पाएगा, परमेश्वर ने उन्हें पाप से निपटने के लिए एक व्यवस्था बनाई और दी ताकि वे अपनी कमजोरी और परमेश्वर की अवज्ञा करने तथा उसके विरुद्ध पाप करने की प्रवृत्ति के बावजूद वाचा में बने रह सकें।

आरोन की कहानी तम्बू के निर्माण के निर्देश दिए जाने और उसके वास्तविक निर्माण और समर्पण के बीच होती है, ताकि इस सबसे महत्वपूर्ण बिंदु को उजागर किया जा सके।

I. पतन – निर्गमन 32:1-35

ए. आरोन – पहला महायाजक – सारांश

आरोन परमेश्वर के एक महान सेवक थे और पूरे राष्ट्र की सेवा करने के लिए उच्च पुरोहित के रूप में चुने गए पहले व्यक्ति थे, उनके पुत्रों को पुरोहित के रूप में नियुक्त किया गया था। अपने छोटे भाई मूसा की तरह, वे वादा किए गए देश में प्रवेश करने के लिए जीवित नहीं रह सके (मूसा – गिनती 20:10-13; आरोन – गिनती 20:23-26). जब आरोन मरे, तो लोग उन्हें बहुत प्यार करते थे और 30 दिनों तक उनके लिए रोए और शोक मनाए (गिनती 20:27-29).

बी. आरोन की विफलता – निर्गमन 32:1-6

आइए उस स्थिति को स्थापित करें जो आरोन की महान विफलता की ओर ले गई। लोग मिस्री दासता से चमत्कारिक रूप से मुक्त हो चुके हैं और अब सिनाई के जंगल में माउंट सिनाई पर शिविर लगाए हुए हैं। परमेश्वर ने उन्हें चमत्कारिक रूप से मार्गदर्शन दिया है (आग का स्तंभ, धुएं का बादल); चमत्कारिक रूप से उन्हें खिलाया है (चट्टान से पानी, बटेर, और मन्ना)। उसने लोगों के साथ चिह्नों और भयानक चमत्कारों के माध्यम से संवाद किया है और अपनी निर्देशों और कानूनों के बारे में लोगों से बात की है। लोगों को उनकी

पूजा, पूजा स्थल और यह कि आरोन और उसके पुत्र पुरोहित के रूप में सेवा करेंगे, के बारे में सामान्य निर्देश दिए गए हैं। अब शिविर में बड़ी गतिविधि है क्योंकि लोग वास्तव में तम्बू बनाने के लिए आवश्यक तत्व इकट्ठा करना शुरू कर देते हैं।

इस समय परमेश्वर मूसा को माउंट सिनाई पर आने के लिए बुलाते हैं जहाँ उन्हें वे पट्टियाँ दी जाएंगी जिन पर परमेश्वर दस आज्ञाएँ लिखेंगे और मूसा को तम्बू बनाने की विस्तृत योजनाएँ और बलिदान व्यवस्था के संबंध में निर्देश भी प्राप्त होंगे। मूसा 40 दिन तक गायब रहे, जो लोगों के लिए बहुत लंबा समय था। इसी महत्वपूर्ण अनुपस्थिति के दौरान हारून अपनी नेतृत्व और पुरोहित की भूमिकाओं में असफल हो जाते हैं।

¹ लोगों ने देखा कि लम्बा समय निकल गया और मूसा पर्वत से नीचे नहीं उतरा। इसलिए लोग हारून के चारों ओर इकट्ठा हुए। उन्होंने उससे कहा, “देखो, मूसा ने हमें मिस्र देश से बाहर निकाला। किन्तु हम यह नहीं जानते कि उसके साथ क्या घटित हुआ है। इसलिए कोई देवता हमारे आगे चलने और हमें आगे ले चलने वाला बनाओ।”

² हारून ने लोगों से कहा, “अपनी पत्नियों, पुत्रों और पुत्रियों के कानों की बालियाँ मेरे पास लाओ।”

³ इसलिए सभी लोगों ने कान की बालियाँ इकट्ठी कीं और वे उन्हें हारून के पास लाए। ⁴ हारून ने लोगों से सोना लिया, और एक बछड़े की मूर्ति बनाने के लिए उसका उपयोग किया। हारून ने मूर्ति बनाने के लिए मूर्ति को आकार देने वाले एक औज़ार का उपयोग किया। तब इसे उसने सोने से मढ़ दिया।

तब लोगों ने कहा, “इस्राएल के लोगों, ये तुम्हारे वे देवता हैं जो तुम्हें मिस्र से बाहर ले आया।”

⁵ हारून ने इन चीज़ों को देखा। इसलिए उसने बछड़े के सम्मुख एक वेदी बनाई। तब हारून ने घोषणा की। उसने कहा, “कल यहोवा के लिए विशेष दावत होगी।”

⁶ अगले दिन सुबह लोग शीघ्र उठ गए। उन्होंने जानवरों को मारा और होमबलि तथा मेलबलि चढ़ाई। लोग खाने और पीने के लिये बैठे। तब वे खड़े हुए और उनकी एक उन्मत्त दावत हुई।

- निर्गमन 32:1-6

यहाँ ध्यान से देखें कि क्या होता है: लोग, जिनके पास करने के लिए कुछ नहीं था, बेचैन हो गए। भगवान और पूजा की सारी बातें, लेकिन मूसा के जाने के दौरान कुछ भी नहीं हुआ – वे एक धार्मिक त्योहार चाहते थे, एक धार्मिक गतिविधि जो मिस्र में उनके पास थी और वे चाहते थे कि आरोन (पुरोहित) एक प्रदान करे।

बिल्कुल, ताबूत और पूजा के सभी तत्व और व्यवस्था अभी तक लोगों को नहीं दी गई थी – मूसा पिछले 40 दिनों से पर्वत पर परमेश्वर से इन्हें प्राप्त कर रहे थे। लेकिन लोग अब उत्सव मनाना चाहते थे – उन्हें मूसा या परमेश्वर से निर्देश मिलने का कोई कारण नहीं दिखा कि वे क्या करना चाहते हैं – और वैसे भी उनके पास आरोन था – क्या वह उनका पुरोहित नहीं था?

तो, हारून, जो मिस्र में पला-बढ़ा था, और धार्मिक रीति-रिवाजों और त्योहारों के बारे में मिस्री तरीकों को जानता था, उनकी मांगों को मानकर एक प्रतीत होने वाले विद्रोह को शांत करने की कोशिश करता है:

- याद रखें, हालांकि वह प्रवक्ता है, लेकिन मूसा नेता है।
- ईश्वर मूसा से बोलते हैं और उन्हें निर्देश देते हैं, न कि आरोन से।
- आरोन शायद यह नहीं जानता था कि कार्य को जल्दी पूरा कैसे किया जाए, लेकिन वह जानता था कि दिव्य रूप से नियुक्त नेता कौन है – और वह ईश्वर के मार्गों के बारे में इतना जानता था कि वह (और लोग) प्रतीक्षा करें!

इसके बजाय, उसने लोगों से सोना इकट्ठा किया और एक बछड़े की मूर्ति बनाई (बेहतर शब्द है युवा बैल) जो एपिस का प्रतिनिधित्व करती थी – एक परिचित छवि जो उर्वरता, समृद्धि और शक्ति का प्रतिनिधित्व करती है। ध्यान दें, छंद 4 में लोग कहते हैं, "यह तुम्हारा परमेश्वर है, हे इस्राएल, जिसने तुम्हें मिस्र की भूमि से बाहर निकाला।" लोग यह स्वीकार कर रहे थे कि उन्हें बचाने वाला परमेश्वर था, लेकिन उनकी अज्ञानता और आध्यात्मिक अपरिपक्वता में उन्होंने दूसरा आज्ञा तोड़ा और प्रभु की पहचान को अपने मिस्री देवताओं में से एक (एपिस) और उसके युवा बैल की छवि से जोड़ दिया। अगले छंद में, आरोन उस क्षण की उत्साह में बहकर एक वेदी बनाता है (जिस पर वह, एक पुरोहित के रूप में, बलिदान चढ़ाता) और अगले दिन को उस त्योहार के रूप में घोषित करता जिसकी उन्होंने मांग की थी – वह बस अपना काम कर रहा था!

अब, जहां तक मूर्तिपूजक देवताओं का संबंध है, यह एक रचनात्मक उत्कृष्ट कृति थी, जिसे ईश्वर को आहत करने के लिए नहीं बनाया गया था – यह मनुष्य की वह धारणा थी कि ईश्वर क्या चाहता है। उद्देश्य था लोगों को शांत करना और उन्हें एक वैध और संतोषजनक पूजा अनुभव देना। बेशक, चीजें जल्दी ही गलत हो जाती हैं – लोग मिस्र में सीखे अपने मूर्तिपूजक तरीकों पर वापस लौट जाते हैं, जहां वे अक्सर अपनी धार्मिक प्रथाओं के साथ अनैतिक यौन गतिविधियों को मिलाते थे। स्थिति बिगड़ती जाती है क्योंकि लोग मूर्तिपूजा से अश्लील आचरण की अत्यधिकता की ओर और अंततः विद्रोह की ओर बढ़ते हैं।

सी. मूसा का हस्तक्षेप – निर्गमन 32:7-29

⁷ उसी समय यहोवा ने मूसा से कहा, "इस पर्वत से नीचे उतरो। तुम्हारे लोग अर्थात् उन लोगों ने, जिन्हें तुम मिस्र से लाए हो, भयंकर पाप किया है। ⁸ उन्होंने उन चीजों को करने से शीघ्रता से इन्कार कर दिया है जिन्हें करने का आदेश मैंने उन्हें दिया था। उन्होंने पिघले सोने से अपने लिए एक बछड़ा बनाया है। वे उस बछड़े की पूजा कर रहे हैं और उसे बलि भेंट कर रहे हैं। लोगों ने कहा है, 'इस्राएल, ये देवता है जो तुम्हें मिस्र से बाहर लाए हैं।'"

⁹ यहोवा ने मूसा से कहा, "मैंने इन लोगों को देखा है। मैं जानता हूँ कि ये बड़े हठी लोग हैं जो सदा मेरे विरुद्ध जाएंगे। ¹⁰ इसलिए अब मुझे इन्हें क्रोध करके नष्ट करने दो। तब मैं तुझसे एक महान राष्ट्र बनाऊँगा।"

- निर्गमन 32:7-10

दृश्य फिर उस पर्वत पर लौटता है जहाँ परमेश्वर मूसा को सूचित करते हैं कि लोग मिस्र में सीखी गई मूर्तिपूजा की आदतों पर वापस लौट गए हैं और उन्हें जिद्दी (सख्त गर्दन वाले = जैसे जानवर जो जुआ या लगाम पहनने से इनकार करते हैं = मनुष्य जो परमेश्वर के प्रति समर्पण या आज्ञाकारिता से इनकार करते हैं) के रूप में निंदा करते हैं। परिणामस्वरूप, परमेश्वर उन्हें सब नष्ट करने की धमकी देते हैं और योजना को फिर से शुरू करने का इरादा रखते हैं, इस बार मूसा को अब्राहम की भूमिका निभानी होगी – आखिरकार, समय परमेश्वर के लिए कोई चिंता का विषय नहीं है, वह कभी जल्दी में नहीं रहता।

निर्गमन 32:11-18 में हम देखते हैं कि मूसा लोगों की ओर से परमेश्वर के सामने याचना कर रहे हैं, यह तर्क देते हुए कि ऐसा करने से मूर्तिपूजक राष्ट्रों को यह संदेह होगा कि परमेश्वर अपने वादे को पितरों के प्रति पूरा करने में असमर्थ हैं। परमेश्वर ने मन बदल लिया, अर्थात् मूसा की प्रार्थना के जवाब में अपने कार्य की योजना को परिवर्तित कर दिया। परमेश्वर प्रार्थना के आधार पर अपना मन बदल सकते हैं और अपने कार्य की योजना को बदल सकते हैं – इसलिए हम प्रार्थना करते हैं! उदाहरण के लिए:

1. हेज़ेकियाह को बताया गया कि वह मरने वाला है, उसके बाद वह ठीक हो गया। उसकी प्रार्थना के बाद, परमेश्वर ने उसे पंद्रह अतिरिक्त वर्ष दिए – 2 राजा 20:1-11.
2. परमेश्वर सडोम और गोमोरा को पूरी तरह नष्ट करने वाले थे – लेकिन अब्राहम के प्रार्थना करने पर उन्होंने मन बदल दिया और लोत के परिवार को बचाया – उत्पत्ति 16:1.

और इसी प्रकार परमेश्वर लोगों को उनके पापों के लिए नष्ट नहीं करता, बल्कि मूसा को वापस शिविर भेजता है ताकि लोगों के बीच व्यवस्था के शीघ्र विनाश को रोका जा सके।

¹⁹ जब मूसा डेरे के समीप आया तो उसने सोने के बछड़े और गाते हुए लोगों को देखा। मूसा बहुत क्रोधित हो गया और उसने उन विशेष पत्थरों को ज़मीन पर फेंक दिया। पर्वत की तलहटी में पत्थरों के कई टुकड़े हो गए। ²⁰ तब मूसा ने लोगों के बनाए बछड़े को नष्ट कर दिया। उसने इसे आग में गला दिया। उसने सोने को तब तक पीसा जब तक यह चूर्ण न हो गया और उसने उस चूर्ण को पानी में फेंक दिया। उसने इस्राएल के लोगों को वह पानी पीने को विवश किया।

²¹ मूसा ने हारून से कहा, “इन लोगों ने तुम्हारे साथ क्या किया? तुम उन्हें ऐसा बुरा पाप करने की ओर क्यों ले गए?”

²² हारून ने उत्तर दिया, “महाशय, क्रोधित मत हो। आप जानते हैं कि ये लोग सदा गलत काम करने को तैयार रहते हैं। ²³ लोगों ने मुझ से कहा, ‘मूसा हम लोगों को मिस्र से बाहर लाया। किन्तु हम लोग नहीं जानते कि उसके साथ क्या घटित हुआ।’ इसलिए हम लोगों को मार्ग दिखाने वाला कोई देवता बनाओ, ²⁴ इसलिए मैंने लोगों से कहा, ‘यदि तुम्हारे पास सोने की अंगूठियाँ हों तो उन्हें मुझे दे दो।’ लोगों ने मुझे अपना सोना दिया। मैंने इस सोने को आग में फेंका और उस आग से यह बछड़ा आया।”

- निर्गमन 32:19-24

मूसा लौटता है, अपने क्रोध में दस आज्ञाओं वाली पट्टिकाओं को तोड़ देता है, मूर्ति को नष्ट करता है और अपने भाई का सामना करता है। ध्यान दें कि आरोन, यह महान व्यक्ति, जिसे महान सम्मान और जिम्मेदारी दी गई है, अपनी बड़ी विफलता पर कैसे प्रतिक्रिया करता है – शुरुआत में, उसके पास अपनी पाप को स्वीकार करने की हिम्मत भी नहीं है! उसके बहाने कमजोर हैं और उसके पापों को बढ़ाते हैं:

1. उन्होंने मुझे यह करने के लिए मजबूर किया। आप जानते हैं वे कैसे हैं! वह यह सुझाव देकर चालाकी करता है कि मूसा भी ऐसा ही करते, वह भी विरोध नहीं करते।
2. यह मेरी गलती नहीं है, मैंने बस सोना आग में फेंका और मूर्ति निकल आई। एक साफ झूठ – पद 4 कहता है कि आरोन ने एक नक्काशी का औजार लिया और उसे पिघले हुए बछड़े का रूप दिया।
3. तुम चले गए थे और मुझे कुछ करना पड़ा! दोष टालना – असल में यह मूसा की गलती थी।

निर्गमन 32:25-29

उसकी कमजोरी, असफलता, और पापों के कारण हम आगे पढ़ते हैं कि इस घटना के परिणाम आरोन के जीवन में क्या हुए:

1. लोगों ने उस संधि का उल्लंघन करके एक बड़ा पाप किया, जिसके लिए वे इतनी उत्साहपूर्वक सहमत हुए थे, इस घटना से ठीक एक महीने पहले – और संधि की शर्तों के अनुसार उन्हें इसके लिए दंडित किया गया।
2. उस दिन तीन हज़ार पुरुषों की जान चली गई जब मूसा ने धार्मिक विद्रोह के फैलाव को रोकने के लिए एक प्रतिक्रिया शुरू की, जो कि शिविर में प्रचलित मूर्तिपूजा के कारण उत्पन्न अव्यवस्था से बढ़ा था। मूसा ने विश्वासयोग्य पुरुषों को आगे आने के लिए बुलाया और लेवी जनजाति ने इस आह्वान का उत्तर दिया। उन्होंने विद्रोह को दबा दिया और परमेश्वर ने उन्हें इनाम दिया कि भविष्य में याजक और तम्बू के सेवक, और बाद में मंदिर के सेवक, विशेष रूप से उनकी जनजाति से ही होंगे (लेवी – लेवियों – लेवियों के)।
3. इन परिणामों के अतिरिक्त, आरोन की अपनी प्रतिष्ठा और परमेश्वर के सामने, मूसा और लोगों के सामने उनकी स्थिति गंभीर रूप से प्रभावित हुई।

वह वह था जिसे लोगों की ओर से परमेश्वर के प्रति सेवक बनने के लिए चुना गया था, लेकिन उसने इस भयानक और बहुत सार्वजनिक असफलता के साथ खुद को अपमानित कर लिया था। बेशक, हम जानते हैं कि आरोन की कहानी यहीं समाप्त नहीं होती, और हम आगे फिर से इसे उठाएंगे, लेकिन पहले हमें दृश्य को मूसा की ओर वापस ले जाना होगा, क्योंकि वह लोगों को पुनः व्यवस्थित करने के लिए संघर्ष कर रहा है ताकि माउंट सीनाई पर परमेश्वर द्वारा उसे दिए गए योजनाओं को पूरा किया जा सके।

डी. पुनर्स्थापन – निर्गमन 32:30-35

एक बार व्यवस्था बहाल हो जाने पर, मूसा परमेश्वर के पास लौटता है और लोगों के पाप को स्वीकार करता है और यह मान लेता है कि यदि परमेश्वर उन्हें दंडित करें, तो मूसा को भी शामिल करना चाहिए (संभवतः अपने नेतृत्व के रूप में अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करते हुए – अर्थात् जिम्मेदारी यहीं समाप्त होती है)।

ईश्वर मूसा को आश्वस्त करते हैं कि वे जानते हैं कि कौन पापी है और उनका दंड, उन्हें अपने जीवन के पुस्तक से हटाने का, अंततः होगा। अब तक, उन्होंने इस पाप के लिए उन्हें तीन तरीकों से दंडित किया है:

1. मूसा ने लोगों को जलाया हुआ मूर्ति के राख से दूषित पानी पिलाया, जो उनकी संयुक्त अपराध की प्रतीक था – निर्गमन 32:20.
2. लेवीयों ने लोगों के 3,000 नेताओं को मार डाला जिन्होंने लोगों के बीच विद्रोह की शुरुआत की – निर्गमन 32:28.
3. ईश्वर ने लोगों पर एक अनिर्दिष्ट महामारी भेजी जिसका हमें कोई विवरण नहीं है – निर्गमन 32:35.

II. यात्रा फिर से शुरू होती है – निर्गमन 33:1-35:3

एक बार जब परमेश्वर ने लोगों को दंडित कर दिया, तो उन्होंने मूसा को उस भूमि की ओर यात्रा फिर से शुरू करने का निर्देश दिया जिसे उन्होंने मूल रूप से उन्हें वादा किया था, हालांकि, उन्होंने धमकी दी कि वे उनके साथ नहीं जाएंगे क्योंकि वे इतने जिद्दी हैं, वे उन्हें रास्ते में नष्ट कर सकते हैं, और यह सुनकर लोग पश्चाताप दिखाते हैं (निर्गमन 33:1-6).

ए। मूसा मध्यस्थता करता है – निर्गमन 33:7-23

पहले मूसा शिविर के बाहर एक विशेष तम्बू में परमेश्वर से बात करते थे। तम्बू में परमेश्वर की उपस्थिति बादल के स्तंभ द्वारा दर्शाई जाती थी। मूसा फिर से प्रभु से मिलने जाते हैं और उनसे निवेदन करते हैं कि वे दया करें और लोगों के साथ उनकी यात्रा में साथ चलें – यह समझते हुए कि उनके बिना आगे बढ़ना व्यर्थ होगा और यह तर्क देते हुए कि उनके बिना उनके बीच उपस्थिति के वे हर अन्य राष्ट्र की तरह होंगे – वे अपनी विशिष्टता खो देंगे।

फिर से, परमेश्वर ने मन बदल लिया और उनके बीच रहने के लिए सहमति दी, तब मूसा ने परमेश्वर को विशेष रूप से देखने का अनुरोध किया और प्राप्त किया जब वह उसके पास से गुजरे, और मूसा ने उसका पीछे का भाग देखा, लेकिन उसका चेहरा नहीं। इस पद को समझाते हुए, एक व्याख्याता ने लिखा,

“जीवंत चित्रात्मक भाषा में, यह पद कहता है कि मनुष्य केवल वहीं देख सकता है जहाँ परमेश्वर गुज़र चुका है और इस प्रकार उसे उसके पूर्व कार्यों और कर्मों से जान सकता है।”

- पृ. 549, कोल

बी. मूसा को नये निर्देश प्राप्त होते हैं – निर्गमन 34:1-35:3

इस समय परमेश्वर मूसा को आज्ञाओं वाली नई पट्टियाँ देते हैं और अपने लोगों के साथ रहने का अपना इरादा पुनः स्थापित करते हैं, साथ ही उनके बीच महान कार्य करने का भी। वह उनके साथ अपने वाचा को पुनः स्थापित करते हैं और अन्य शर्तें और चेतावनियाँ जोड़ते हैं कि मूर्तिपूजक राष्ट्रों के साथ मेलजोल से इस्राएलियों को मूर्तिपूजा की ओर ले जाया जाएगा। वह मूसा को विभिन्न त्योहारों, शनिवार और बलिदान चढ़ाने के संबंध में निर्देश देते हुए समाप्त करते हैं। फिर मूसा लोगों के पास लौटते हैं ताकि ये निर्देश उन्हें सुनाएं और पाठ कहता है कि परमेश्वर के साथ उनके समय के परिणामस्वरूप उनका मुख चमक रहा था – इतना कि जब वे लोगों से बात करते तो उसे ढक लेते थे।

सी। ताबर्नाकल का निर्माण – निर्गमन 35:4-40:11

तंबू के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए, कृपया बाइबलटॉक.टीवी श्रृंखला तंबू देखें, जो रॉबर्ट जी. चिल्टन जूनियर द्वारा प्रस्तुत है।

निर्गमन के अंतिम अध्यायों में मूसा वास्तविक मण्डप के संबंध में विवरण प्रदान करता है। यह पहले से दी गई निर्देशों की पुनरावृत्ति है, सिवाय इसके कि अब इन योजनाओं का उपयोग मण्डप को बनाने और जोड़ने के लिए किया जा रहा है, जिस उद्देश्य से इसे बनाया गया था – परमेश्वर की पूजा करने और लोगों के पापों से निपटने के लिए। विडंबना यह है कि सबसे पहला व्यक्ति जिसका पाप धोया जाएगा वह आरोन, महायाजक होगा।

तो, हम आरन की कहानी को उठाते हैं जब हम अध्याय 40 में तम्बू के निर्माण की समाप्ति की ओर तेजी से बढ़ते हैं।

आरोन की अभिषेक – निर्गमन 40:12-38

सब कुछ बन जाने और जगह पर स्थापित हो जाने के बाद, मूसा को निम्नलिखित निर्देश दिए गए।

12 “हारून और उसके पुत्रों को मिलापवाले तम्बू के प्रवेशद्वार पर लाओ। उन्हें पानी से नहलाओ। 13 तब हारून को विशेष वस्त्र पहनाओ। तेल से उसका अभिषेक करो और उसे पवित्र करो। तब वह याजक के रूप में मेरी सेवा कर सकता है। 14 तब उसके पुत्रों को वस्त्र पहनाओ। 15 पुत्रों का अभिषेक वैसे ही करो जैसे उनके पिता का अभिषेक किया। तब वे भी मेरी सेवा याजक के रूप में कर सकते हैं। जब तुम अभिषेक करोगे, वे याजक हो जाएंगे। वह परिवार भविष्य में भी सदा के लिये याजक बना रहेगा।” 16 मूसा ने यहोवा की आज्ञा मानी। उसने वह सब किया जिसका यहोवा ने आदेश दिया था।

- निर्गमन 40:12-16

यहाँ यह आदमी, आरोन, यह दयनीय असफल व्यक्ति, जो उस काम को करने में विफल रहा जिसके लिए उसे चुना गया था (लोगों के पापों के लिए बलिदान चढ़ाने वाला सेवक बनना), वह उन्हें पाप में ले गया और लगभग

उनकी विनाश का कारण बना। यही व्यक्ति अंततः अपने पापों के लिए बलिदान चढ़ाएगा और फिर लोगों की ओर से परमेश्वर को बलिदान चढ़ाने का अपना कार्य शुरू करेगा।

जब Aaron सेवा के लिए तैयार हो जाते हैं, तो मूसा तम्बू परिसर के निर्माण का सारांश प्रस्तुत करते हैं और निर्गमन पुस्तक को समाप्त करते हैं यह वर्णन करके कि परमेश्वर ने लोगों से कैसे संवाद किया।

³⁴ जब सभी चीज़ें पूरी हो गईं, बादल ने मिलापवाले तम्बू को ढक लिया। और यहोवा के तेज़ से पवित्र तम्बू भर गया। ³⁵ बादल मिलापवाले तम्बू पर उतर आया। और यहोवा के तेज ने पवित्र तम्बू को भर दिया। इसलिए मूसा मिलापवाले तम्बू में नहीं घुस सका।

³⁶ इस बादल ने लोगों को संकेत दिया कि उन्हें कब चलना है। जब बादल तम्बू से उठता तो इस्राएल के लोग चलना आरम्भ कर देते थे। ³⁷ किन्तु जब बादल तम्बू पर ठहर जाता तो लोग चलने की कोशिश नहीं करते थे। वे उसी स्थान पर ठहरे रहते थे, जब तक बादल तम्बू से नहीं उठता था। ³⁸ इसलिए दिन में यहोवा का बादल तम्बू पर रहता था, और रात को बादल में आग होती थी। इसलिए इस्राएल के सभी लोग यात्रा करते समय बादल को देख सकते थे।

- निर्गमन 40:34-38

पाठ

यह निर्गमन पुस्तक के हमारे अध्ययन को पूरा करता है, लेकिन समाप्त करने से पहले, मैं आरोन के असफलता के अनुभव से कुछ सबक लेना चाहूंगा – फिर यह श्रृंखला आपकी होगी।

1. यहां तक कि महान लोग भी गिर जाते हैं

आरोन को परमेश्वर द्वारा चुना गया था, उन्हें शक्ति और पद दिया गया था लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि उनका जीवन विफलता से मुक्त होगा। परमेश्वर हमें अपनी सेवा में उपयोग कर सकते हैं, न कि इसलिए कि हम महान हैं, बल्कि इसलिए कि वह महान है! ए-टाइप, अधिक उपलब्धि प्राप्त करने वाले, जो कई क्षेत्रों में सफल हुए हैं, उन्हें यह समझना चाहिए कि वे भी असफल हो सकते हैं और बहुत बुरी तरह असफल हो सकते हैं। जब वे असफल होते हैं, तो उन्हें यह समझना चाहिए कि परमेश्वर उन्हें अभी भी उपयोग कर सकते हैं, भले ही वे असफल हो चुके हों, क्योंकि उनका प्रेम हमारे किसी भी पिछले सफलताओं या असफलताओं से बड़ा है।

2. हमारी असफलताएँ कभी नहीं भुलाई जातीं, परन्तु उन्हें माफ़ कर दिया जाता है।

दीनार्त आरोन, उसकी विफलता हमेशा के लिए बाइबल में दर्ज है ताकि सभी देख सकें। लेकिन आरोन अपनी जिंदगी और सेवा के साथ आगे बढ़ेगा क्योंकि परमेश्वर ने उसकी चूक को क्षमा किया। कुछ लोग सोचते हैं कि जब तक वे अपनी या किसी और की गलतियों को याद रख सकते हैं, तब तक कोई वास्तविक क्षमा नहीं है।

आरोन की कहानी हमें याद दिलाती है कि यदि हम भविष्य के लिए अपनी आत्मविश्वास और दूसरों को क्षमा करने की क्षमता और इच्छा को पुनः प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमें अपनी असफलताओं के बजाय परमेश्वर की क्षमा पर अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहिए। जो लोग स्वयं को क्षमा नहीं करते, उन्हें दूसरों को क्षमा करने में

कठिनाई होती है – भले ही वे चाहें। यदि आप मुख्य रूप से अपनी या किसी और की असफलताओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो आप कभी क्षमा में सफल नहीं होंगे और उससे मिलने वाली चिकित्सा प्राप्त नहीं कर पाएंगे।

3. असफलता सुधार के लिए आधार तैयार करती है

आरोन ने स्वर्ण बछड़े के प्रकरण से एक कठिन सबक सीखा। यह एक ऐसा सबक था जिसने उसे पुरोहित के कठोर मंत्रालय के लिए तैयार किया। उसकी असफलता ने उसकी समझ और करुणा की क्षमता को बढ़ाया। तम्बू की भव्यता और बलिदान प्रणाली के दैवीय रहस्यों के बावजूद, महापुजारी के वस्त्रों की सुंदरता और प्रभावशाली उपस्थिति के अलावा, आरोन ने कभी यह तथ्य नहीं भुलाया कि, जिस प्रकार वह लोगों का प्रतिनिधित्व करता था, वह भी केवल एक नाजुक मानव था जिसे परमेश्वर की दया की आवश्यकता थी। यह सबक असफलता के माध्यम से उसके हृदय पर अमिट रूप से अंकित हो गया था, और इसके कारण वह एक अधिक प्रभावी मंत्री और दयालु व्यक्ति बन गया था।

शुरुआत से अंत तक बाइबल मनुष्य की परमेश्वर के आदेशों को बनाए रखने में निरंतर असफलता की कहानी बताती और दोहराती है। यह परमेश्वर के असफल मानवता को क्षमा करने और पुनर्स्थापित करने के निरंतर प्रयास को भी वर्णित करती है। यह हमें आत्मविश्वास देना चाहिए कि जब भी हमें लगे कि हमने बहुत बड़ी गलती की है, तब भी हम क्षमा मांगने के लिए उसके पास जा सकते हैं।

चाहे वह पहली बार पश्चाताप और बपतिस्मा के लिए हो (प्रेरितों के काम 2:38) या पचासवीं बार एक पापी ईसाई क्षमा के लिए एक सच्चा प्रार्थना करता हो (1 यूहन्ना 1:7-9), परमेश्वर हमेशा विश्वासयोग्य हैं कि हमें क्षमा करें और हम पर दया करें – हर असफलता के लिए।